पाठ्यक्रमः गांधी का दर्शन (एम जी पी–002)

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

सत्रीय कार्य कोड : एम जी पी–002/ए एस एस टी/टी एम ए/2025–26
पूर्णांकः 100

आपको कुल पाँच प्रश्न करने हैं, प्रत्येक भाग में से कम से कम दो प्रश्नों का चयन करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की शब्द–सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

भाग – I

1. हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म गांधी के जीवन-दृष्टिकोण को किस प्रकार आकार देते हैं?

2. गांधी के आर्थिक एवं राजनीतिक दर्शन पर पाश्चात्य विचारकों के प्रभाव को रेखांकित कीजिए।

3. आधुनिक सभ्यता (modern civilization) के विरुद्ध गांधी के तर्कों का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

4. गांधीवादी सर्वोदय के मूल अवयवों (components) का वर्णन कीजिए। जनोन्मुखी अर्थशास्त्र (people-oriented economics) में इसके अनुप्रयोग (application) पर चर्चा कीजिए।

5. गांधी स्वराज को आत्मसंयम (self-control) और आत्मशासन (self-rule) के साथ किस प्रकार समीकृत (equate) करते हैं?

भाग – II

प्रश्न के प्रत्येक भाग पर लगभग 250 शब्दों में टिप्पणी कीजिए :

6. क) गांधी पर सेमिटिक (semitic) धर्मों का प्रभाव।
   ख) गांधी के अनुसार अनासक्ति योग और गीता।

7. क) गांधी में मानव की परिपूर्णता (perfectibility) की अवधारणा।
   ख) गांधी का अद्वैत दृष्टिकोण।

8. क) अहिंसक प्रतिरोध की गांधी की रणनीति।
   ख) अस्पृश्यता (untouchability) की प्रथा पर गांधी के विचार।

9. क) सार्वभौमिक धर्म: विविधता में एकता।
   ख) कर्तव्य और सामाजिक सेवा का गांधी द्वारा अंतर्संबंध।

10. क) स्वदेशी आंदोलन और खादी।
    ख) 'सत्याग्रह' और 'निष्क्रिय प्रतिरोध' (passive resistance) के बीच अंतर।